आगामी नये भारत की प्रथम भारती 'दादी'

मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत एक ऐसा करिश्माई व्यक्तित्व जिसने आध्यात्मिकता की मशाल लेकर जन-जन के हृदय में परमात्म प्यार की अलख जगाई, उन्हें उन अनुभूतियों से जगाया जो वे सांसारिक दुनिया में करते रहे। समस्त संसार में शिव-सागर के पद्चिन्हों पर चल भावी दुनिया का झंडा भवसागर में फँसे हुए लोगों के दिलों पर गाड़ा और कहा उठो, जागो, फिर न रुको, क्योंकि स्वर्णिम सवेरा...आ ही रहा है... ऐसा कह एक श्वेत वस्त्रधारिणी ने शांतिदूत बन शांति का परचम सारे गलोब पर लहराया, आज भी वे हम सबके मध्य अपनी उन्हीं शुभ आशाओं के साथ जीवंत अभिनय कर रही हैं।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय एक आध्यात्मिक शैक्षणिक संस्थान, जिसकी स्थापना स्वयं निराकार परमात्मा द्वारा सन् 1936 में हुई।

नारी में विद्यमान शक्ति को आध्यात्मिकता द्वारा पुनर्जागृत किया जाये तो वह समाज में महान क्रान्ति की नायिका बन सकती है। अध्यात्म प्रज्ञा राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, एक ऐसी विदूषी सशक्त नारी का नाम है जिन्होंने सिद्ध किया कि नारी शक्ति-स्वरूपा है। उन्होंने अपने नेतृत्व में भारत और विश्व के लगभग 137 देशों के लाखों भाई-बहनों के जीवन में अद्भुत परिवर्तन लाकर विश्व सेवा के लिए प्रेरित किया। उन्होंने शान्ति, सत्यता, समरसता, सद्भावना, आत्मिक दृष्टि, वात्सल्य, करूणा जैसे जीवन मूल्यों को परमात्म शिक्षा और विश्वास से सुसज्जित किया।

धरा पर हुई महान आत्मा अवतरित

दिव्यता की मूर्ति अनन्य आत्मा का जन्म सन् 1 जून 1922 में हैदराबाद सिन्ध(पाकिस्तान) में हुआ। वह बचपन से ही दिव्य आभा से आलोकित थीं। सन् 1937 में विश्व के पालनहार, सबके परमपिता परमात्मा शिव ने हीरे जवाहरात के प्रतिष्ठित व्यापारी दादा लेखराज को परमात्मा के सत्य स्वरूप एवं भावी नई दुनिया का अलौकिक साक्षात्कार कराया। हैदराबाद के सुप्रसिद्ध ज्योतिषी की पुत्री रमा देवी 14 वर्ष की तरुण अवस्था में इस संस्था के संस्थापक के संपर्क में आयी। रमा देवी के दूरदर्शी एवं भविष्य वक्ता लौकिक पिता को अपनी पुत्री के भावी जीवन के संकेत प्रारंभ से ही मिल गये थे। उन्हीं के अनुरूप यही रमा देवी आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति पर प्रकाशमणि कहलाईं।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के तत्कालिन जनरल सेक्रेट्री डॉ. परवेज़ द कुलर दादी प्रकाशमणि को पीस मेडल प्रदान कर सम्मानित करते हुए।

रत्नप्रभा दादी प्रकाशमणि ने अपनी बाल्यावस्था से ही स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की संकल्पना के साथ इस संस्थान की आध्यात्मिक क्रान्ति में अपने आप को प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सम्मुख पूर्ण रूप से ईश्वरीय कार्य में समर्पित कर दिया। अपनी निर्मल, कुशाग्र बुद्धि और सत्यता की पहचान के कारण ब्रह्माकुमारी संगठन में प्रेरणा और उदाहरणमूर्त बनीं। इनकी अलौकिक शक्ति को पहचानकर प्रजापिता ब्रह्मा ने छोटी आयु की दादी प्रकाशमणि तथा अन्य कुमारियों और माताओं का संगठन बनाकर अपना सबकुछ ईश्वरीय कार्य में समर्पित किया। तब से दादी प्रकाशमणि इस संस्था में एक आदर्श ब्रह्माकुमारी तथा संस्था की स्थापना-स्तम्भ के रूप में आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग को प्रस्तुत करने में एक अनुपम प्रेरणास्रोत बनीं। संस्थान में समर्पित होने के बाद कुछ ही समय में उन्होंने स्वयं को एक कुशल, तेजस्विनी, तीव्रगामी पुरुषार्थी के रूप में प्रस्तुत किया और मानवीय मूल्यों से सुसज्जित प्रकाश स्तम्भ बन कर उभरीं।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 13th July 2017
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।